2

जयवंत से भी बढ़कर

(रोमियों 8)

बदला हुआ जीवन आशिषों से भरपूर है ...।

रोमियों 8:35-39 जय पाने अर्थात विजय की बात करता है! यह ऐसा संदेश है जिसे हम सब सुनना चाहते हैं। जीवन की परीक्षाएं हमें हर ओर से बुलाती हैं और ऐसा लगता है कि हम जीत नहीं सकते। आत्मिक दृष्टिकोण से भी कई बार हमें यही लगता है कि विजय असम्भव है। हम मसीही बन गए हैं, यह सही है। परन्तु हमारे अतीत में भयंकर पाप हैं; वर्तमान में बड़ी बड़ी परीक्षाएं हैं; भविष्य का कोई पता नहीं है। हम अपने अतीत में कैसे जी सकते हैं? वर्तमान की परीक्षाओं के बावजूद हम अपने विश्वास पर कैसे टिके रह सकते हैं? उन समस्याओं में जो कल आ सकती हैं हम कैसे स्थिर रह सकते हैं? हम विजय कैसे पा सकते हैं?

यह वचन कहता है कि हम पा सकते हैं। यह यह *नहीं* कहता कि हम परीक्षाओं और त्रास्दियों से मुक्त हो जाएंगे। पर यह यह *कहता* है कि उन परीक्षाओं के बावजूद हम विजय पा सकते हैं, हम जीत सकते हैं, हम जयवंत हो सकते हैं!

वास्तव में यह इससे भी बढ़कर कहता है। यह कहता है कि हम ''जयवंत से भी बढ़कर'' हो सकते हैं। मूल में यह शब्द *hupernikaw* से लिया गया है। *Nikaw* शब्द ''जय पाना'' के लिए सामान्य शब्द से लिया गया है। *Huper* शब्द पूर्वसर्ग है जिसे हम अंग्रेज़ी में ''hyper'' के रूप में जानते हैं, जिसका अर्थ है ''अति।'' सो ''hyperactive child'' का अर्थ ''अति स्क्रिय'' बच्चा है। इस कारण पौलुस कहता है कि हम केवल जयवंत ही नहीं बल्कि अति-जयवंत हैं! अत: उसके कहने का अर्थ था कि हमें ''बहुत ही महिमामय विजय'' पाते हैं।[1] अन्य संस्करणों में इसे इस प्रकार अनुवाद किया गया है: ''हम ज़बर्दस्त विजय पाते हैं'' (फिलिप्स); ''ज़बर्दस्त विजय हमारी है'' (NEB); ''हम ज़बर्दस्त ढंग से जयवंत होते हैं'' (NASB); ''हमने पूर्ण विजय पाई है'' (TEV); ''हम महिमामय ढंग से जयवंत होते रहते हैं'' (विलियम्ज़)।

हम सभी समझ सकते हैं कि ''ज़बर्दस्त ढंग से विजय पाना'' का क्या अर्थ है, क्या नहीं समझ सकते? यह तो ऐसे है जैसे हम दौड़ में, मानो मैराथन, अर्थात 26 मील लम्बी दौड़ में भाग ले रहे हैं। और हम जीत जाते हैं। हम केवल फीते पर ही नहीं जीतते, बल्कि दस मील से जीतते हैं! या हम फुटबाल टीम में खेल रहे हैं और हम जीत जाते हैं, परन्तु यह जीत 14-13 गोलों से नहीं बल्कि 99-0 गोलों से है! यह ऐसा है जैसे हम जीतने के लिए ही हों और हम जीत जाते हैं, परन्तु केवल जीतते ही नहीं हैं। हम केवल थोड़ा सा लाभ नहीं कमाते बल्कि लाभ में लाखों डॉलर कमाते हैं! मसीही होने के नाते जीवन की कठिनाइयों पर जय हम इसी तरह से पाते हैं। परमेश्वर ने केवल ''थोड़ी सी सफलता'' या थोड़े से विजय नहीं बनाना चाहता था।

बल्कि वह हमें ''ज़बर्दस्त विजय'' देता है! हम ''अति-जयवंत'' होते हैं! मसीही लोग ''जयवंत से भी बढ़कर'' हैं!

कैसे? रोमियों 8 उन ढंगों की बात करता है जिनसे परमेश्वर ने हमें आशीष दी है। जो हमारे लिए परिस्थितियों पर जय पाना सम्भव बनाते हैं। और बेहतर ढंग से समझने के लिए कि हम क्यों कह सकते हैं कि हम ''जयवंत से भी बढ़कर हैं'' उन आशीषों पर विचार करते हैं।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम दण्ड के अधीन नहीं हैं (रोमियों 8:1-8)

पौलुस कहता है, ''जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं'' (रोमियों 8:1)। मसीही बनने से पूर्व हम दण्ड के अधीन थे। हम ने पाप किया था और पाप का दण्ड हमारे ऊपर सुना दिया गया था जो मृत्यु है (रोमियों 6:23)। हमें मृत्यु का दण्ड दिया गया था! परन्तु ''मसीह यीशु में'' हमें दण्ड से मुक्त कर दिया गया। हम ने यीशु में विश्वास लाया, अपने पापों से मन फिराया, यह अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और यीशु में बपतिस्मा लिया (रोमियों 6:3, 4)। फिर हमारे पाप क्षमा कर दिए गए यानी हम नया जन्म पाकर परमेश्वर की संतान बन गए। दण्ड को हटा लिया गया! हमें पता चला कि किसी और ने पहले ही दण्ड चुका दिया था! हम ने ''दोषी साबित हुए'' शब्द सुने थे। हम उस दिन की प्रतीक्षा में जब दण्ड दिया जाना था। मृत्यु के कतार में बैठे थे। फिर यह स्वागतयोग्य समाचार मिला कि ''तुम आज़ाद हो?'' अब हम अपने पापों के दण्ड के अधीन नहीं रहे।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे लिए पाप में वापस जाना सम्भव नहीं होगा। जिससे हम फिर से उस दण्ड में आ जाएं जिससे हम बचे थे। परन्तु इसका अर्थ यह है कि विश्वासी मसीही होने के नाते अब हम दण्ड के अधीन नहीं रहे!

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हमारे पास परमेश्वर का आत्मा है (रोमियों 8:9-14)

मसीही होने के नाते हमें पवित्र आत्मा, या परमेश्वर का आत्मा या मसीह का आत्मा मिला है। पवित्र आत्मा हमें तब मिलता है जब हम मसीही बनते हैं (प्रेरितों 2:38; 5:32)। क्यों? एक बात के लिए हमारे अन्दर आत्मा का वास इस तथ्य की गवाही के लिए है कि हमारा उद्धार हो हो गया है, यानी हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं। एक और बात के लिए आत्मा हमें ''आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे'' के योग्य बनाता है (रोमियों 8:13)। आत्मा हमें पाप पर विजयी जीवन जीने में सहायता करता है। तीसरा, आत्मा के द्वारा हमें मुर्दों में से जिलाया जाएगा और अन्त में आत्मा किसी ''अच्छा महसूस होने वाले'' ढंग अर्थात आश्चर्यकर्म के द्वारा नहीं बल्कि विशेष रूप से प्रकट किए गए वचन के द्वारा अगुआई देता है। परन्तु जो बात हमें यह समझने के लिए है कि एक स्वर्गीय अतिथि के रूप हमें हमारे अन्दर वास करते हुए, हमें मसीही जीवन में सहायता करने के रूप में पवित्र आत्मा मिला है। ''दण्ड के अधीन नहीं'' अर्थात मृत्यु का दण्ड हटा लिया गया है। और अतीत की बात को दूर कर दिया गया है। हम हमें वर्तमान परमेश्वर परमेश्वर के जीवन में जीने के लिए हमारी सहायता करने के लिए परमेश्वर के आत्मा का वास

मिला है। कोई आश्चर्य नहीं कि हम ''अति जयवंत'' हैं।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं (रोमियों 8:14-17)

परमेश्वर की संतान कहलाना कितनी शानदार बात है! एक बूढ़ा प्रचारक जिससे हर कोई प्रेम करता था, मुस्कुराते चेहरे और गज की तरह तनी छाती के साथ, संतुष्ट और आनन्दित ऐसे मिलता था जैसे कभी कुछ गलत हो ही नहीं सकता। किसी ने एक बार उससे पूछ लिया,ख ''आप ऐसे दिखाई देते हैं जैसे संसार आप ही का हो।'' बिना रुके उसने उत्तर दिया, ''मेरा नहीं है, परन्तु मेरे पिता का है!'' वास्तव में संसार हमारे पिता का ही है! हम निराश या भयभीत क्यों हों? हम इस संसार की परेशानी और कठिनाइयों पर ज़बर्दस्त विजय पा सकते हैं क्योंकि हम उसकी संतान हैं जिसने संसार को बनाया है!

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम उसके वारिस हैं (रोमियों 8:15-17)

इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम परमेश्वर की संतान हैं तो हम उसके वारिस भी हैं। क्या करोड़पति की संतान होना और उसके वारिस होना बड़ी बात नहीं होगी? फिर उस पिता की संतान और वारिस होना जिसके पास सब कुछ है इससे भी कितनी बड़ी बात है!

ये भी ध्यान दें कि हम ''मसीह के साथ संगी वारिस'' हैं। उस महिमा की जो परमेश्वर के साथ आरम्भ से लेकर पृथ्वी पर आकर अपने आपको ईश्वरीयता के कई विशेषाधिकारों से रहित करने के समय परमेश्वर के साथ यीशु अर्थात वचन की थी। फिर उस स्वागत की कल्पना करें जो पिता के दाहिने हाथ अपने सही स्थान पर लौटने पर उसे मिला। उस समय उसे कितनी ज़बर्दस्त महिमा,आदर,सामर्थ और तेज मिला होगा। यह हवाला (प्रकाशितवाक्य 3:20 भी देखें) बताता है कि हमें भी ऐसा ही स्वागत यानी ऐसी ही महिमा मिलेगी! हम उसकी मिरास में साझी होंगे! फिर तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि हम सचमुच में ''जयवंत से भी बढ़कर'' हैं।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हमें महिमामय आशा मिली है (रोमियों 8:18-25)

मैं इस पर और ज़ोर नहीं दे सकता जो न इस हवाले में और न नये नियम के किसी और हवाले में मसीही होने के रूप में हमें समस्याओं या सताव, बीमारी या मृत्यु से छूट दिए जाने की प्रतिज्ञा दी गई हो।

यदि मसीही लोगों के ऊपर भी ''शरीर के ऊपर आने वाले'' सभी रोग आने हैं तो फिर मसीही बनने का मतलब ही क्या है? इसका एक कारण यह है कि क्योंकि मसीही व्यक्ति के लिए बीमारी का अर्थ नया हो सकता है। यानी इसे श्राप के बजाय आशीष के रूप में देखा जा सकता है। यह सम्भवत लगे भी तौभी मसीही व्यक्ति सर्वदा यह कह सकता है कि ''मैं चाहे कितना भी कष्ट सहूं या कितनी भी देर तक सहूं मेरी राह बेहतर जीवन देख रहा है। यदि मुझे यहां पर पीड़ा और कष्ट से राहत कभी न मिलें तौभी मुझे यह वहां मिल जाएगा और वह राह

अनन्तकालिक होगी।'' मसीही व्यक्ति कह सकता है कि कोई और दर्शन या धर्म ऐसी बात नहीं कह सकता।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि आत्मा हमारे लिए विनती करता है (रोमियों 8:26, 27)

पवित्र आत्मा हमारे लिए क्या करता है? इस हवाले से पता चलता है कि वह ''ऐसी आहें भर भर कर जो ब्यान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है'' (रोमियों 8:26)। ऐसे लोग हैं जो यह नहीं मानते कि पवित्र आत्मा हमारे लिए उसके अलावा जो वचन के द्वारा उसने हम पर प्रकट किया है कुछ और करता है। परन्तु यह आायत करती है कि वह ऐसा करता है जो केवल एक व्यक्ति ही कर सकता है न कि प्रगट किया हुआ वचन। तौभी ध्यान दें कि यह यह नहीं कहता कि वह परमेश्वर के वचन के *विपरीत* हमारे लिए विनती करता है; बल्कि वह परमेश्वर की इच्छा के *अनुसार* हमारे लिए सिफारिश करता है। इसके अलावा यह भी जोड़ा जाए कि हम जानते हैं कि आत्मा यह हमारे लिए करता है, न किसी ऐसी विशेष भावना के कारण जो आत्मा हमें देता है, बल्कि वैसे ही जैसे हम जानते हैं कि हमारा उद्धार हो गया है क्योंकि बाइबल अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन हमें बताता है!

इसके बावजूद आत्मा ही यह करता है! कैसे? और क्यों? मुझे पक्का पता नहीं है, जैसे मुझे यह पता नहीं है कि परमेश्वर मेरे जीवन में सब वस्तुओं को मिलाकर भलाई के लिए काम कैसे करता है। पर मैं जानता हूं कि आत्मा इसे करता है! परमेश्वर ध्यान देता अर्थात सुनता है और पुष्टि में हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर की बात पक्का करता है। मसीह हमारा मध्यस्थ है और पिता के सामने हमारा केस लड़ता है। और किसी प्रकार पवित्र आत्मा हमारे लिए विनती करता है। शायद वह हमारे मनों की गहरी तड़प को जिसे जिसके लिए हमें शब्द नहीं मिलते शब्दों में डाल देता है। कैसे? मुझे पक्का पता नहीं है। मैं तो इतना जानता हूं कि परमेश्वर, मसीह,ख्और पवित्र आत्मा सभी मेरी प्रार्थनाओं में दिलचस्पी लेते हैं और मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर देने में सहायता कर रहे हैं। और मेरे लिए यही काफ़ी है! मैं अभूतपूर्वक ढंग से जय पा सकता हूं क्योंकि प्रार्थना करते समय पवित्र आत्मा मेरी सहायता करता है।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हमें परमेश्वर के उपाय से लाभ मिलता है (रोमियों 8:28)

बाइबल में पाई जाने वाली सबसे कीमती प्रतिज्ञाओं में से एक रोमियों 8:28 में मिलती हैं ''और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनकुसार बुलाए हुए हैं।'' ध्यान दें कि यह यह नहीं कहता कि जो कुछ हमारे साथ होता है वह अच्छा ही होता है। बल्कि यह कहता है कि ''परमेश्वर उन सब बातों को मिलाकर भलाई उतपन्न करवाता है'' या ''सब मिलकर भलाई के लिए काम करते हैं'' (KJV) या ''जो कुछ भी होता है वह भलाई के सांचे में ढल जाता है'' (फिलिप्स)। परमेश्वर हमारे जीवनों की हानिकारक लगने वाली चीज़ों को निकाल सकता है, जो बुरी या अच्छी दोनों हो सकती हैं, और फिर उन्हें इस तरह से इकट्ठे

करता है कि उनमें से बुरी लगने वाली चीज़ों में से भी वह कुछ भलाई निकाल सकता है। और ''भलाई'' का अर्थ यहां ''सुखद'' या ''आनन्ददायक'' नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि अन्तिम रूप में भलाई के रूप में लिया जाना चाहिए, न कि केवल अस्थाई! जो परमेश्वर के कार्य के लिए और अन्त में, हमारे लिए भला हो।

इसके अलावा ध्यान दें कि यह प्रतिज्ञा सबके लिए *नहीं* है। यह मसीही लोगों के लिए है क्योंकि मसीही लोग ही केवल इस संसार में ''उसकी इच्छा के अनुसार बलाए हुए'' हैं। यदि आप मसीही नहीं हैं तो आप इस प्रतिज्ञा का दावा नहीं कर सकते परन्तु यदि मसीही बन जाएं तो कर सकते हैं।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि हम उद्धार पाने के लिए ठहराए हुए हैं (रोमियों 8:29, 30)

हमारे लिए इन आयतों से सीखने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उद्धार पाने के लिए ठहराए हुए हैं! पहले से ठहराया होने का अपने आप में अर्थ, सही समझे जाने पर, बाइबल की शिक्षा है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि कैल्विनवादी पहले से ठहराए होने की बात सही है। कैल्विनवादी पहले से ठहराए होने की शिक्षा, जैसा कि मुझे लगता है कि यह है कि परमेश्वर ने एक अर्थ में संसार का आरम्भ होने से पूर्व उद्धार पाए हुए सभी लोगों की एक सूची बनाई और उस सूची में कोई किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकता। इस विचार को नकारा जाना आवश्यक है, एक कारण के लिए, क्योंकि बाइबल सिखाती है कि उद्धार पाने या न पाने की वास्तविक पसन्द हमारी अपनी है, जबकि कैल्विनवादी पहले से ठहराए होना उस पसन्द के होने से इनकार करता है।

तब भी हम उद्धार पाने के लिए पहले से ठहराए गए हैं। कैसे? शायद बाइबल के अनुसार पहले से ठहराए होने को समझने का सबसे बढ़िया ढंग यह जान लेना है कि परमेश्वर ने पहले से ठहराया कि वह मसीह के द्वारा लोगों का उद्धार करेगा। जब हम विश्वास और आज्ञापालन में मसीह को ग्रहण करने का निर्णय लेते हैं तो हम अपने आप को उन लोगों में मिला देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया है। हम कह सकते हैं कि हम उद्धार पाने के लिए पहले से ठहराए गए हैं।

पर ये आयतें किताबी सच्चाई बताने के उद्देश्य से नहीं थी। उन्हें मसीही लोगों को शांति देने के उद्देश्य से लिखा गया था। वे ऐसा कैसे करती हैं? इस प्रकार वे हमें आश्वस्त करती हैं कि हमारा उद्धार संयोग से नहीं हुआ बल्कि यह योजना के अनुसार हुआ है।

समझाने के लिए: एक गोल्फ का खिलाड़ी दाहिनी ओर ऊबड़ खाबड ज़मीन में पहला शॉट मारता है। उसका शॉट बड़ा अच्छा लगता है सिवाय इसके कि यह बाईं ओर की ऊबड़ खाबड़ भूमि में जाता है। उसका तीसरा शॉट हरियाली तक जाता है परन्तु एक बंकर में इसके ऊपर निकल जाता है। चौथे शॉट में वह बंकर में से फूट निकलता है और बॉल को कप में मारता है और उसका निशाना सही लगता है। ऐसे खिलाड़ी को कई बार सक्लैम्बल करने वाला कहा जाता है। वह आगे बढ़ते हुए बेहतर करने का अनुमान लगाकर बुरी स्थितियों में से बाहर आता है और अन्त में अपने उद्देश्य को पा लेता है। फुटबाल में हम इसी शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

क्वाटर बैक जो खत्म हो रही खेल को आगे बढ़ाए और किसी प्रकार योजना रहित दिशा में बढ़ते हुए ले जाऐ उसे अच्छा ''सक्लैम्बलर'' कहा जाता है।

रोमियों 8:29, 30 के कहने का अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि परमेश्वर ''सक्लैम्बलर'' नहीं है। उसने आगे बढ़ते हुए हमें खिलाया नहीं। वह धोखा देने के लिए पैर नहीं घुमाता और फिर उन्हें वापस नहीं लाता। उसने संसार के उद्धार के लिए एक योजना बनाई और उस योजना को वैसे ही लागू किया जैसे उसने चाहा था! हमें यह आश्वासन है कि उस योजना के भाग के रूप में हमें उद्धार मिला है! हमारा उद्धार परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग है! हमें उद्धार के लिए पहले से ठहराया गया है इसलिए हम जयवंत से भी बढ़कर हैं।

जयवंत से भी बढ़कर क्योंकि परमेश्वर हम से प्रेम करता है (रोमियों 8:31-39)

परमेश्वर का प्रेम महान है: उस ने ''अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा।'' परमेश्वर का प्रेम सामर्थी है: ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' (रोमियों 8:31)। परमेश्वर का प्रेम अटल है: ''कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?'' पौलुस पूछता है (8:35)। और उसका उत्तर है कि ''कोई नहीं!'' हमारे और परमेश्वर के बीच में *न आ सकने* वाली बातों की सूची को देखें। क्या आप किसी और बात पर विचार कर सकते हैं जिसे जोड़ा जा सकता हो? लगता है कि पौलुस ने अनुमान लगा लिया था कि कोई यह करने की कोशिश कर सकता है, सो वह यह कहते हुए समाप्त करता है, ''देखो, यदि मुझ से कोई बात छूट गई तो मैं उसे इन शब्दों में शामिल करना चाहता हूं: 'न कोई और सृष्टि।''' सृष्टि में कोई भी चीज़, यानी संसार की कोई भी बात हमारे और परमेश्वर के प्रेम के बीच में नहीं आ सकती!

उदाहरण के लिए क्या आप कभी न्युक्लियर युद्ध के धर्मशास्त्रीय प्रभावों पर चकित हुए हैं? यदि कोई न्युक्लियर युद्ध हो तो क्या हम धार्मिक दृष्टिकोण से इस पर कुछ कह सकते हैं? क्या बाइबल इसका उल्लेख करती है? हां, यह ''न कोई और सृष्टि'' वाक्यांश को जोड़ते हुए इसका उल्लेख करती है। न्युक्लियर युद्ध या किसी भी विपत्ति के लिए हम एक बात कह सकते हैं कि यदि ऐसा हो जाए तो इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमसे प्रेम करना छोड़ दिया है। परमेश्वर तब भी हम से प्रेम करता है और सृष्टि की कोई चीज़ इसे बदल नहीं सकती।

सारांश

उम्मीद है कि आप इस तथ्य से प्रभावित हुए होंगे: इन सभी आशिषों से हमें अपने आप को ''अति-जयवंत'' मानना आवश्यक है। हम जयवंत से भी बढ़कर हैं! हम अत्याधिक जय पाते हैं!

हम उनसे जिन्हें इस निमन्त्रण को मानने की आवश्यकता है क्या कहें।

पहले तो आपको उपलब्ध इन सभी आशिषों के साथ आप एक और सप्ताह तक, एक और दिन तक, यहां तक कि एक और घण्टे तक उनके बिना रहना क्यों चाहेंगे? ये सभी कारण मसीही लोग जयवंत लोगों से भी बढ़कर क्यों हैं इस का भी कारण हैं कि आप मसीही क्यों बनें, या यदि आप विश्वासी मसीही नहीं हैं तो आप मसीह में वापस क्यों आए।

दूसरा मैंने कहा कि आपको परमेश्वर के प्रेम से कोई अलग नहीं कर सकता। यह पूरी तरह

से सही नहीं है। क्या आपने ध्यान दिया कि आपको परमेश्वर से प्रेम से अलग कर सकने वाली चीज़ों की इस सूची में दो बातें छूट गई हैं? एक तो *पाप* है। पाप आपको परमेश्वर के प्रेम से मिलने वाले लाभों से अलग करता है। परमेश्वर आपसे तब भी प्रेम करता है जब आप पाप करते हैं, परन्तु आपको उसके प्रेम का लाभ तब तक नहीं मिलता जब तक आप पाप में जीवन बिताते रहते हैं। दूसरी बात जो छूट गई है वह *आप* हैं। आप अपने आपको पाप कारना चुनकर परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकते हैं। क्या आप परमेश्वर से दूर हैं? पीछे कौन हटा? परमेश्वर तो हटा नहीं। आप ही हट गए। आपने अपने पाप के द्वारा अपने आपको परमेश्वर से अलग कर दिया। फिर आप उसके पास वापस कैसे जा सकते हैं? अपनी ही पसन्द के द्वारा। उन आशिषों को स्वीकार करना चुनकर जो परमेश्वर प्रेम में आपको देना चाहता है। क्या आप उस उद्धार को स्वीकार करके जो मसीह में है उन आशिषों को स्वीका करेंगे।

टिप्पणी

[1]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट* रिवाइज़्ड बाय विलियम एफ़. अर्ंडट एंड एफ़. विल्बर गिंगरिच (शिकागो, इलिनोइस: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 1957), 849.